5

आकलन कैसे हो–कुछ प्रस्तावित गतिविधियाँ

पिछले लेख में आपने आकलन से संबंधित कुछ आवश्यक बातों की जानकारी प्राप्त की। आकलन अनेक तरीकों से किया जा सकता है। भाषा का आकलन करते समय कौन-सी गतिविधियाँ आयोजित की जाएँ, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 की संस्तुतियों के आधार पर किस प्रकार के सवाल बच्चों से पूछे जाएँ–यही इस लेख का विषय है। निश्चित रूप से इस प्रकार की गतिविधियाँ भाषा की कक्षा में आकलन को एक आनंददायी प्रक्रिया बनाएँगे।

गतिविधियों द्वारा आकलन करते समय यह आवश्यक नहीं कि भाषा के हर कौशल के लिए अलग-अलग गतिविधि कराएँ। एक ऐसी गतिविधि भी चुनी जा सकती है जिससे तीन, चार या अधिक कौशलों का आकलन किया जा सके। एक उदाहरण देखें–

चित्र पढ़ना

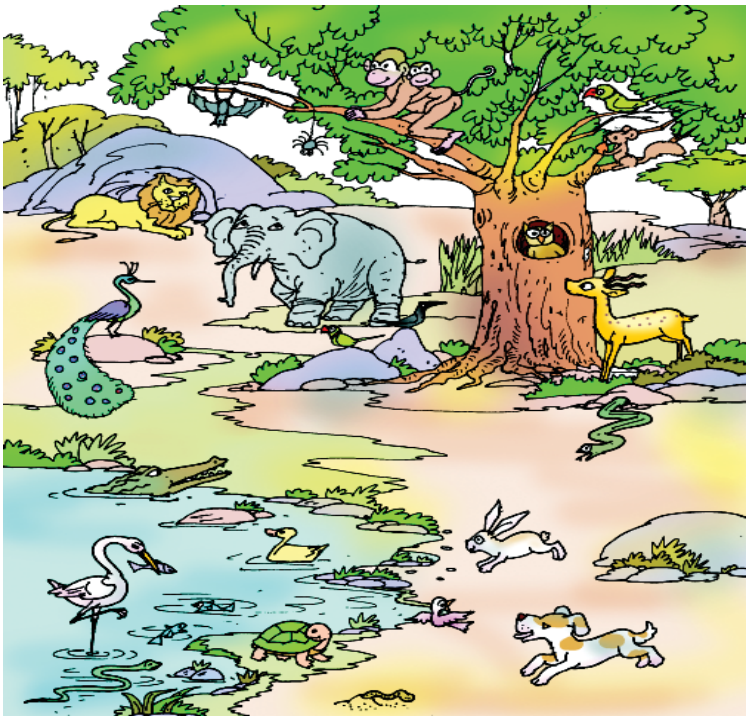

पशु-पक्षियों के नामों की पहचान

- बच्चों को चित्र अच्छे से देखने दें फिर पूछें कि चित्र में कौन-कौन से पशु-पक्षी दिखाई दे रहे हैं?
- प्रत्येक बच्चे से एक-एक नाम लेते जाएँ और बड़े अक्षरों में श्यामपट्ट पर लिखते जाएँ,
- कई बार पशु-पक्षियों के नाम बुलवाएँ और साथ ही नामों के नीचे उँगली रखते जाएँ,
- यह जानने के लिए कि सभी बच्चे नामों को पहचानने लगे हैं, प्रत्येक से किसी एक नाम के नीचे उँगली रखवाकर पशु-पक्षी का नाम बताने के लिए कहिए।

आइए, समझें–

पहली कक्षा में बच्चे पढ़ना नहीं जानते, किंतु शब्दों की आकृतियों को अपने जाने-पहचाने नामों के रूप में देखकर बच्चे धीरे-धीरे उन्हें पहचानने लगते हैं। ऐसे कई अभ्यासों के बाद वे उन शब्द-ध्वनियों के लिखित रूप से भी परिचित होने लगते हैं। पढ़ने की शुरुआत कुछ मनपसंद सार्थक नामों/शब्दों और चित्रों के द्वारा हो तो स्वाभाविक है पढ़ाई बोझिल नहीं होगी। इसी तरह चित्रों की सहायता से बड़ी आसानी से हम ये आकलन कर सकते हैं कि कौन कितने शब्दों की पहचान कर पा रहा है। कक्षा–1 के प्रारंभ में बच्चे कुछ ही परिचित नामों को पहचान पाएँगे पर जैसे-जैसे उन्हें शब्दों को कई-कई बार पढ़ने का अवसर मिलेगा, उनकी शब्दों को पहचानने की क्षमता बढ़ती जाएगी।

कौन क्या कर रहा है?

- आसपास बैठे 3-4 बच्चों को छोटे समूहों में बिठाकर चित्र पर बातचीत करवाएँ। बच्चों को स्वयं प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करें। बातचीत के बिंदु कुछ इस प्रकार हो सकते हैं–
  - हाथी क्या कर रहा है?–चल रहा है/नाच रहा है/पीछे देख रहा है?
  - हाथी कैसे चल रहा है?–धम्मक-धम्मक/धीरे-धीरे,
  - हाथी किसको देख रहा है?–बंदरिया को/साँप को/हिरण को/कौए को।
  - सारस क्या खा रहा है? –मछली/कछुआ/बत्तख,
  - चमगादड़ क्या कर रहा है?–उलटा लटका है/मकड़ी से बातें कर रहा है/झूल रहा है–आदि,
- इसी तरह समूहों में पता करें कि कौन-से बच्चे प्रश्न पूछ पाते हैं और कौन सही वाक्य संरचना के साथ अपनी बात कह पाते हैं। साथ ही जो बच्चे ठीक से बोल नहीं पा रहे हों उन्हें दूसरे बच्चों के सहयोग से बोलने के लिए प्रेरित करें,
- प्रत्येक समूह को पूरी कक्षा के सामने अपनी बात कहने का अवसर दीजिए।

आइए, समझें–

छोटे समूहों में बच्चे अधिक खुलकर आपस में बातचीत करते हैं। अतः छोटे समूहों में आकलन करने से प्रत्येक बच्चे की वस्तु-स्थिति का पता

चल जाता है। उन्हें एक-दूसरे से प्रश्न करने और उत्तर देने के लिए प्रोत्साहित कीजिए और फिर देखिए कि वे चित्रों में कितना कुछ ढूँढ़ पाते हैं। यह गतिविधि आप कक्षा 1 से लेकर 5 तक के बच्चों से करवा सकते हैं। भाषा का स्तर समूहों में अलग-अलग हो सकता है। समूहों में बच्चों की क्षमताएँ भी अलग से पहचानना आसान होता है और हम आकलन के साथ-साथ उन्हें उसी वक्त सीखने का भी मौका देते चलते हैं। यही हमारा उद्देश्य होना चाहिए–सिर्फ़ आकलन करके संतुष्ट हो जाना नहीं बल्कि आकलन के साथ सीखने की प्रक्रिया को और भी गति देना।

कौन किससे क्या बोल रहा है?

- बच्चों से अब दो-दो की जोड़ी में बातचीत करवाएँ ताकि जो बच्चे कम बोलते हैं उन्हें आपस में बोलने का अवसर अधिक मिले,
- बच्चों से कहें कि चित्र को और ध्यान से देखें और एक-दूसरे से पूछें और बताएँ कि कौन किससे क्या कह रहा है?
  - तोते ने हाथी से क्या बोला होगा?
  - हाथी ने क्या जवाब दिया होगा?
  - क्या मोर भी हाथी से कुछ कहना चाह रहा है?
  - छोटे बंदर ने माँ से क्या पूछा होगा?
  - बंदरिया ने क्या कहा होगा?
  - शेर से कोई बात क्यों नहीं कर रहा है?

आइए, समझें–

ऊपर दिए गए प्रश्न सिर्फ़ उदाहरण के तौर पर हैं। वास्तव में तो बच्चों को एक-दो प्रश्नों द्वारा शुरुआत करवाकर अपने आप जोड़ियों में प्रश्न-उत्तर करने के अवसर दें। प्रारंभ में आदत डालने के लिए आप सहयोग कर सकते हैं। आपका उद्देश्य मुख्यत: यहाँ इस तरह के खुले अंक वाले प्रश्न पूछना है जिससे बच्चे अपनी कल्पना शक्ति से तरह-तरह के उत्तर दें। कौन कितनी काल्पनिक बातें सोच पाता है और उन्हें अभिव्यक्त कर पाता है यह आप कक्षा में घूमते हुए पता लगा सकते हैं।

कौन कहाँ रहता है?

- कक्षा दो के बच्चों के भाषायी कौशलों और समझ के स्तर को जानने के लिए आप उन्हें और गहराई में जाने के अवसर दीजिए,
- आसपास बैठे 3-4 बच्चों को समूहों में चित्र पर बातचीत करवाएँ। बातचीत के बिंदु कुछ इस प्रकार हो सकते हैं–
  - कौन पानी में रहता है?
  - कौन ज़मीन पर रहता है?
  - कौन आकाश में उड़ता है?

  श्यामट पर ऐसा खाका खींच लें–

पानी में रहने वाले	*ज़मीन पर रहने वाले*	*आकाश में उड़ने वाले*

- प्रत्येक समूह से एक-एक नाम तीनों तरह के लेते जाएँ और तालिका में भरते जाएँ,
- एक मज़ेदार चर्चा को बढ़ावा दें और सबको अपनी समझ और जानकारी के अनुसार बोलने का मौका दें। कुछ उदाहरण–
  - बंदर कहाँ रहता है?–ज़मीन पर या पेड़ पर?
  - क्या हाथी पेड़ पर रह सकता है?
  - तोता कहाँ रहता है?–आकाश में या पेड़ पर?
  - मोर कहाँ रहता है?–क्या वह उड़ सकता है?
  - साँप धरती पर रहता है या धरती के अंदर?
  - कछुआ कहाँ रहता है? क्या वह तैर सकता है?
  - शेर कहाँ रहता है? ज़मीन पर/जंगल में/गुफा में
  - क्या खरगोश मछली से मिलने पानी में जा सकता है?
  - एक साँप बिल में से निकल रहा है पर एक तालाब में है? क्या साँप तैर सकता है?

आइए, समझें–

प्रत्येक बच्चा अपने अनुभवों, अपनी जानकारी (जो उसे किस्से-कहानियों आदि के द्वारा प्राप्त है) के आधार पर अलग-अलग उत्तर देगा। यहाँ आपका उद्देश्य बच्चों से जानकारी लेना कतई नहीं होना चाहिए। यहाँ महत्वपूर्ण बात यह हो कि आप सभी बच्चों को खुलकर, बेझिझक अपनी बात कहने दें और साथ ही एक सहयोगी के रूप में तरह-तरह के प्रश्नों द्वारा सोचने के अवसर दें। अपने आसपास की दुनिया को ध्यान से देखने, समझने और जानने की आदत को प्रोत्साहित करना हमारा उद्देश्य होना चाहिए। बातचीत के दौरान भाषा संरचना की बारीकियाँ, जैसे–कौन ज़मीन पर रहता है, कौन अंदर रहता है, कौन पेड़ के ऊपर रहता है, कौन पानी में रहता है, आदि का आकलन स्वाभाविक रूप से करते चलें।

लेखन की शुरुआत

- चित्र में आए पशु-पक्षियों में से किन्हीं पाँच को अपने मनपसंद रंगों से भर दें और फिर उन्हें कोई मज़ेदार नाम दे दें, जैसे–अप्पू हाथी, छुन-छुन मोर, न्नू बंदर आदि,
- बच्चों को अपने-अपने चित्र में रंग भरने दें। यहाँ यदि वे हाथी को हरा और खरगोश को नीला बनाएँ तो परेशान न हों। वे कोई भी रंग भरें या कोई भी नाम दें, उनका अपना दिया हुआ होना चाहिए,
- यदि वे चित्रों के नीचे या ऊपर नाम लिख पाएँ तो लिखवाएँ,
- कुछ विशेषण शब्द जैसे प्यारा/प्यारी, नटखट, सुंदर, फुर्तीला, भूखा, काला, हरा आदि उन्हें बताएँ और उन्हें अपने मनपसंद नामों के पहले बुलवाएँ और लिखवाएँ, जैसे– नटखट न्नू, प्यारा खरगाश, सुंदर मोर, आदि,

?

कहानी सुनाना

- अपने मनपसंद पशु-पक्षी पर एक छोटी-सी कहानी सुनाओ,
- बच्चों को छोटे-छोटे समूहों में अपनी कहानी सुनाने को कहें,
- जिस बच्चे को थोड़ी मदद की ज़रूरत हो, सहयोग करें पर सबको मौका दें।

आइए, समझें–

किसी भी चित्र में बहुत-सी बातें (अर्थ) छुपी होती हैं। चित्र का अपनी तरह से मतलब निकालते हुए अपनी कहानी बनाना बच्चों को सीखी हुई भाषा का उपयोग करने में बहुत सहायक होता है। उन्हें सृजनात्मकता के साथ-साथ अभिव्यक्ति के मौके मिलते हैं। बच्चों को ऐसी कहानियाँ सुनाने के पर्याप्त अवसर दें और उनकी इस क्षमता को पहचानने के लिए आकलन करें।

कविता पूरी करो

- धम्मक धम्मक आता .....
  धम्मक धम्मक जाता .....
- छम-छम, छम-छम नाचे .....
  टें टें करता ..... शोर।
- ..... कूदे इधर-उधर।
  ..... ताके टुकर-टुकर।

कुछ काम करें

छोटे बच्चों को मिट्टी, तिनकों, कंकड़ आदि से खेलने का बहुत शौक होता है। अकसर वे मिट्टी की जगह आटे से भी खेलते हैं। वे गुँधा हुआ आटा लेकर चिड़िया आदि बनाने का प्रयास करते हैं। यही प्रक्रिया वे मिट्टी में पानी डालकर, उसे गूँधकर, उससे तरह-तरह के खिलौने-चिड़िया, चूल्हा, पतीला, कटोरी आदि बनाने में भी दोहराते हैं। बच्चों से कहा जा सकता है कि वे मिट्टी से चित्र में नज़र आने वाले अपने मनपसंद पशु-पक्षियों को आकार दें। उन्हें अपने तरीके से सजाएँ।

आइए, समझें–

खिलौने बनाने की यह प्रक्रिया बच्चों के हाथ की मांसपेशियों का विकास करेगी। इससे चित्र, लेखन आदि कार्य में सहूलियत होगी साथ ही उनके सौंदर्य बोध और चीज़ों को बनाने के लिए सामग्री की उचित मात्रा तय करने संबंधी बिंदुओं का आकलन हो सकेगा। खिलौने बनाने की प्रक्रिया को गौर से देखने पर यह पता चल सकेगा कि बच्चा खिलौनों को उचित आकार, बनावट आदि देने के लिए किन कुशलताओं या उपायों/तरीकों का इस्तेमाल करता है, जैसे–हाथी की पूँछ बनाने के लिए मिट्टी को रस्सी का आकार देता है या कुछ तिनकों, ऊन का इस्तेमाल करता है, आदि। यह सूक्ष्म अवलोकन बच्चों के चिंतन और कार्य-शैली की जानकारी देगा।

उपर्युक्त गतिविधियों के द्वारा हमने किन-किन गतिविधियों का आकलन किया, आइए, देखते हैं–

बच्चे–

- *पशु-पक्षियों के नाम लिखित रूप में पहचान लेते हैं,*
- *उनके बारे में छोटे-छोटे वाक्य बोल लेते हैं,*
- *उनसे संबंधित सवाल करते हैं,*
- *कल्पनात्मक विचार अभिव्यक्त कर लेते हैं,*
- *समझकर भेद करते हुए भाषा का उपयोग करते हैं।*

कविता पढ़ना

आम

मुझे बहुत भाते हैं नानी
मीठे-मीठे आम,
भर डलिया तू मुझे खिला दे
लूँगा तेरा नाम।

बहुत बड़ी है बगिया तेरी
छोटा मेरा पेट,
और पेट से भी छोटा है
मेरे मुँह का गेट!

घबरा मत ना खा पाऊँ मैं
बगिया भर के आम,
न दे टॉफ़ी न दे बिस्किट
दे बस केवल आम!

आम खिलाकर करवा ले
तू मुझसे सारे काम,
सिर्फ एक दिन को कर दे
बस बगिया मेरे नाम!

कविता का विषय आम है और बच्चों को आम बहुत भाते हैं। अत: स्वाभाविक है कि कविता बच्चों को बहुत अच्छी लगेगी। कविता शिक्षण के बाद अभ्यास भी बच्चों की रुचि को ध्यान में रखकर बनाए जाएँ तो बच्चे उत्साह से जवाब देंगे।

अभ्यास बनाने में बच्चों की रुचि का पूरा ध्यान रखें। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 के मार्गदर्शक सिद्धांतों को ध्यान में रख कर बनाए गए अभ्यासों से बच्चों में विभिन्न भाषायी कौशलों के साथ रचनात्मकता का भी विकास होगा। यह जानने के लिए कि बच्चों ने कविता के बारे में क्या समझ बनाई– आप बच्चों से कुछ सवाल पूछें तथा कुछ गतिविधियाँ कराएँ। बच्चे इन सबमें तभी रुचि लेंगे जब आप बच्चों से उनकी ही भाषा में बात करेंगे यानी कि सरल शब्दों से पगी भाषा। ध्यान रखें कि अभ्यासों में बच्चों को अपने अनुभव पर आधारित उत्तर देने के अवसर मिलें, साथ ही कल्पना की ऊँची उड़ान भरने के भरपूर मौके मिलें।

सवाल इस प्रकार बनाएँ कि आप जान सकें कि बच्चों ने कविता को सुनकर तथा पढ़कर क्या समझा है? इन सवालों के जवाब बच्चों को मौखिक रूप से देने हैं। सवाल कुछ यूँ हों–

बताओ–

- *यदि तुम्हें डलिया भरकर आम दे दिए जाएँ तो तुम क्या करोगी?*
- *आम के अलावा और कौन-कौन से फल तुम्हें अच्छे लगते हैं?*

- *आम से बनी कौन-कौन सी चीज़ें तुम्हें अच्छी लगती हैं?*
- *तुम अपने घर में बोली जाने वाली भाषा में आम को क्या कहते हो?*
- *अगर तुम्हें एक दिन के लिए आम की बगिया मिल जाए तो तुम क्या करोगे?* ज़रा सोचो तो।
- *आम फलों का राजा है तो अंगूर क्या है?*
- *कौन किससे छोटा है–आँख, कान, नाक?*

एक बात का ध्यान रहे कि एक ही सवाल के अनेक उत्तर हो सकते हैं। जैसे डलिया भर आम पाने पर बच्चा क्या करेगा? इसका जवाब हर बच्चा कल्पना तथा रुचि के अनुसार अलग-अलग देगा। कोई बच्चा ठीक से जवाब न भी दे पाए तो उसका आकलन शून्य के स्तर पर न करें। उसे डाँटिए नहीं, उसे उत्साहित करें कि वह अपनी बात सही ढंग से कह सके।

भारत एक बहुभाषी देश है। एक ही कक्षा में अलग-अलग परिवेश से अलग-अलग बोली बोलने वाले बच्चे आते हैं। बहुत से बच्चे कक्षा में बात करने में झिझकते हैं। इसलिए ऐसे सवाल जरूर पूछें जिनके जवाब देने के लिए बच्चे को अपने घर में बोली जाने वाली भाषा के इस्तेमाल का अवसर मिले।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 में भाषा शिक्षण के दौरान बहुभाषिकता को एक संसाधन के रूप में इस्तेमाल करने की सिफ़ारिश की गई है।

तुम अपने घर में बोली जाने वाली भाषा में आम को क्या कहते हो? इसके जवाब में बच्चे अपनी-अपनी भाषा में आम के लिए बोले जाने वाले शब्द बताएँगे। अपनी बोली/भाषा में आम के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द बच्चा बड़े आत्मविश्वास के साथ बताएगा। इस प्रकार के अभ्यासों से जहाँ बच्चों की झिझक दूर होगी और उनका आत्मविश्वास बढ़ेगा वहीं बच्चे एक ही शब्द को कई अन्य भाषाओं में भी जानेंगे। दूसरी भाषाओं के प्रति अपनेपन तथा सम्मान की भावना उनके हृदय में जगेगी।

भाषा शून्य में विकसित नहीं होती है। बच्चा जब भाषा सीखता है तो भाषायी कौशलों के विकास के साथ अन्य विषय भी सीखता है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 में संस्तुति की गई है कि बच्चे को सभी विषय एकीकृत करते हुए पढ़ाए जाएँ।

इसलिए आकलन करते समय यह भी ध्यान रखें कि भाषा के साथ ही अन्य विषयों का भी आकलन हो जाए। इसी प्रकार का एक अभ्यास है–

आओ चलें बगिया में

- आम का पेड़ देख रहे हो न, इन पर लगे आमों में रंग भरो।
- अब लिखो, तुमने कितने आमों में रंग भरे

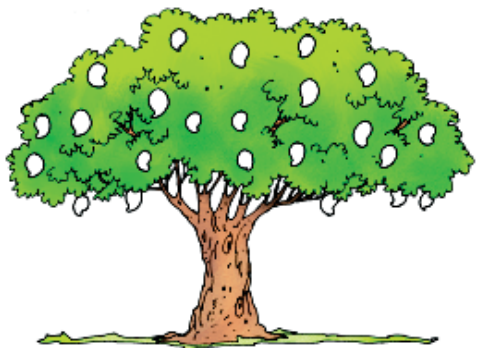

इस अभ्यास में बच्चे को आमों में रंग भरने को कहें तथा लिखने को कहें कि उसने कितने आमों में रंग भरा है। यह नहीं सोचें कि भाषा का चित्रकला से क्या संबंध? चित्रकला भाषा से इतर नहीं है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 में पहली और दूसरी कक्षा में भाषा शिक्षण के दौरान कला शिक्षण की सिफ़ारिश की गई है।

बच्चे को भाषा सिखाते समय आकलन के दौरान आयोजित इस प्रकार की गतिविधियाँ बच्चे में चित्रकला के प्रति रुझान विकसित कर सकती हैं। इन गतिविधियों से बच्चा भाषा के साथ ही चित्रकला भी सीख लेगा। यह गतिविधि बच्चे के लेखन कौशल (भाषा) और गिनना (गणित) संबंधी आकलन में सहायक होगी।

बच्चे को दिन-प्रतिदिन के व्यवहार से जुड़े अभ्यास जरूर दें।

- भाषा को अन्य विषयों से जोड़ने की गतिविधि का एक नमूना (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा प्रकाशित हिंदी की पाँचवीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक) *रिमझिम भाग 5* से दिया जा रहा है।
- एक सादा रूमाल लो या कपड़ा काटकर बनाओ। उस पर किसी एक टाँके का इस्तेमाल करते हुए बड़ों की मदद से कढ़ाई करो। ये काम कक्षा के लड़के-लड़कियाँ सब करें।

कच्चा आम-पका आम

- कच्चे और पके आम से बनी कौन-कौन सी चीज़ें तुम खाते हो?

कच्चे आम से बनी चीज़ें

_____

_____

_____

_____

पके आम से बनी चीज़ें

_____

_____

_____

_____

इस अभ्यास से आप बच्चे के लेखन कौशल का आकलन कर पाएँगे। बच्चे के शब्द भंडार की जानकारी भी प्राप्त कर सकेंगे। हो सकता है कि इसे हल करने में बच्चे को आपकी/अपने घर के अन्य सदस्यों की मदद लेनी पड़े।

आओ पहचानें

- इनमें से कौन-से फल गुठली वाले हैं और कौन-से बीज वाले? सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाओ।

फल	*गुठली वाले*	*बीज वाले*
पपीता		
आम		
बेर		
अमरूद		
जामुन		
अंगूर		

इस अभ्यास से लेखन कौशल की जाँच के साथ आप यह भी जान सकेंगे कि बच्चे में वर्गीकरण का कौशल कहाँ तक विकसित हुआ है।

कविता सुनाने/पढ़ाने के बाद बोध प्रश्नों के साथ ही कुछ ऐसे अभ्यास तथा गतिविधियाँ कराएँ जिनसे यह मालूम हो सके कि बच्चे को भाषा संबंधी ज्ञान कितना हुआ है।

कविता में से ऐसे शब्दों को चुनो जिनमें "म" आया है। जैसे–

मुझे, मीठे-मीठे, नाम, मुँह, मत, आम, काम

इन शब्दों को देखो अब "म" से बने कोई तीन शब्द तुम लिखो।

_____

_____

_____

_____

_____

_____

इस अभ्यास के माध्यम से बच्चों को 'म' वर्ण को बार-बार देखने का अवसर मिलेगा। इससे बने शब्दों के लेखन के द्वारा यह आँकने में सुगमता होगी कि वे कहाँ तक सही ढंग से लिख पा रहे हैं? इसी तरह से अन्य वर्णों से संबंधित गतिविधियाँ/अभ्यास करा सकते हैं।

बच्चों की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है कि उन्हें कोई भी काम/चीज़ करके देखने में आनंद आता है। आकलन के दौरान भी उनकी इस प्रकृति को मद्देनज़र रखते हुए गतिविधियाँ दें।

अब बनाओ बाजा

आम की गुठली को साफ़ पानी से धो लो। अब गुठली को एक ओर से ज़मीन पर घिसो। घिसे हिस्से को मुँह से बजा के देखो। पीं-पीं की आवाज़ आई न!

आओ बनाएँ बंदनवार

आम के पत्ते लो। उन्हें एक मोटे धागे या सुतली में लगाओ। लो हो गई तैयार बंदनवार। अब इसे अपने घर के दरवाज़े पर सजाओ।

इन गतिविधियों को आप बच्चों को निर्देश देकर कराएँ, इससे इस बात का आकलन हो जाएगा कि बच्चे ने आपकी बात ठीक से समझी या नहीं (सुनना कौशल)। बच्चों से इसे पढ़कर करने को भी कहें। तब इसी गतिविधि से आप यह जान सकेंगे कि बच्चे में पढ़ने का कौशल कहाँ तक विकसित हुआ है। इस गतिविधि में बच्चों को भी आनंद आएगा और आप खेल-ही-खेल में उनका आकलन भी कर सकेंगे। यह गतिविधि बच्चों को यह भी सिखला देगी कि किस प्रकार से फेंकने लायक समझी जाने वाली चीज़ों का भी बेहतर इस्तेमाल किया जा सकता है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 बच्चे में सृजनात्मकता के विकास पर बल देती है।

चाँद का कुर्ता

हठ कर बैठा चाँद एक दिन, माता से यह बोला
सिलवा दो माँ, मुझे ऊन का मोटा एक झिंगोला।

सन-सन चलती हवा रात भर, जाड़े से मरता हूँ
ठिठुर-ठिठुर कर किसी तरह यात्रा पूरी करता हूँ।

आसमान का सफ़र और यह मौसम है जाड़े का
न हो अगर तो ला दो कुर्ता ही कोई भाड़े का।

बच्चे की सुन बात कहा माता ने, अरे सलोने!
कुशल करे भगवान, लगे मत तुझको जादू टोने।

जाड़े की तो बात ठीक है, पर मैं तो डरती हूँ
एक नाप में कभी नहीं तुझको देखा करती हूँ।

कभी एक अंगुल भर चौड़ा, कभी एक फुट मोटा
बड़ा किसी दिन हो जाता है और किसी दिन छोटा

घटता-बढ़ता रोज़ किसी दिन ऐसा भी करता है
नहीं किसी की भी आँखों को दिखलाई पड़ता है।

अब तू ही बता, नाप तेरी किस रोज़ लिवाएँ
सी दें एक झिंगोला जो हर रोज़ बदन में आए?

कविता के भीतर

- चाँद अपनी माँ से किस बात के लिए ज़िद कर रहा है?
- चाँद ने आसमान में अपनी किस यात्रा का ज़िक्र किया है?
- वह कहाँ-से-कहाँ तक यात्रा करता है? चाँद को यह यात्रा क्यों करनी पड़ती है?
- माँ चाँद का कुर्ता सिलवाने के लिए क्यों तैयार नहीं है? सही पर (✓) का निशान लगाओ–
  - उसके पास पहले से ही बहुत कुर्ते हैं।
  - नया कुर्ता सिलवाने के लिए पैसे पूरे नहीं हैं।
  - वह समझ नहीं पा रही कि किस नाप का कुर्ता बनवाया जाए।
  - कुर्ते के लिए उपयुक्त कपड़ा नहीं मिल पा रहा है।
- चाँद हमेशा एक से आकार का क्यों नहीं रह पाता है? सही पर (✓) का निशान लगाओ।
  - खेलते-कूदते चोट लगने से उसका अंग कट-फट जाता है?
  - वह अपने को छिपाने का जादू जानता है।
  - पृथ्वी का चक्कर काटने के कारण सूरज की रोशनी उसके पूरे भाग पर नहीं पड़ती, जिस हिस्से पर पड़ती है, हमें वही नज़र आता है।
  - कभी-कभी वह अपने को बादलों में छिपा लेता है।

चाँद की ड्रेस

- माँ ने चाँद को ऐसी कौन-सी ड्रेस सुझाई जिसे वह हर रोज़ पहन सकता है? अपनी कल्पना के आधार पर उस ड्रेस का चित्र बनाओ।

भाड़े का कुर्ता

- "न हो अगर तो ला दो कुर्ता ही कोई भाड़े का।" यहाँ पर भाड़े के कुर्ते से क्या मतलब है?
- अगर चाँद की माँ उसके लिए तुम्हारा कुर्ता भाड़े पर लेने के लिए आ जाए तो तुम उनके सामने क्या-क्या शर्तें रखोगे? तुम्हारी तरफ़ से एक शर्त यहाँ लिखी जा रही है–कुर्ता ठीक दो दिन में वापिस कर देना।

अमावस्या की रात

- कविता में से वह पंक्ति छाँटकर लिखो जिसमें चाँद के बिल्कुल न दिखने की बात कही गई है। ऐसी रात को 'अमावस्या' की रात कहते हैं। जिस रात को चाँद पूरा दिखाई देता है उसे क्या कहते हैं?
- साल में किसी एक अमावस्या को रोशनी वाला त्योहार मनाया जाता है। याद कर उस त्योहार का नाम लिखो।

किसकी-कैसी ज़िद

- इस कविता में चाँद ने कुर्ते के लिए अपनी माँ से ज़िद की है। अगर सूरज अपनी माँ से कुछ माँगे तो बताओ वह किस चीज़ के लिए ज़िद करेगा।

माँ से चाँद की बातचीत

- चाँद ने कुर्ता सिलवाने की बात कविता में कही है। अब दोनों की बातचीत बिना कविता के कहो–

तुम्हारी सुविधा के लिए–

चाँद–माँ, मुझे आपसे एक ज़रूरी बात करनी है।
माँ–कहो बेटा!
चाँद–.....

नाप की इकाइयाँ

"कभी एक अँगुल भर चौड़ा, कभी एक फुट मोटा"। यहाँ पर 'अँगुल' नाप की एक इकाई है। किस आकार की चीज़ों को तुम अँगुल से नापना ठीक समझोगे उन पर गोला बनाओ– श्यामपट्ट, मिटाने वाली रबर, शार्पनर, बैग, पेंसिल, कक्षा में बिछी दरी, चॉक, किताब, ज्योमैट्री बॉक्स, पेन।

चाँद का नाप

इन चित्रों को ध्यान से देखो।

- कौन-सी संख्या पर पूर्णिमा/पूर्णमासी का चाँद है ?
- नाप लेने से संबंधित कोई एक प्रश्न बनाओ और उसका उत्तर भी दो।

विलोम शब्द

'बड़ा किसी दिन हो जाता है और किसी दिन छोटा'। बड़ा और छोटा आपस में विलोम है, इस आधार पर नीचे दिए गए वाक्य पूरे करो

- *रात में तारे चमकते हैं।*
- *.....में सूरज चमकता है।*
- *चाय गरम ही अच्छी लगती है।*
- *जूस .....ही अच्छा लगता है।*
- *हाथी के पैर बहुत मोटे होते हैं।*
- *चूहे की पूँछ बहुत .....होती है।*

अब इसी तरह के दो वाक्य तुम भी बनाओ।

सर्दी और ठिठुरना

'ठिठुर-ठिठुरकर किसी तरह यात्रा पूरी करता हूँ'। यहाँ ठिठुरने से मतलब है–जब सर्दी/जाड़ा लगता है। मान लो तुम्हे सर्दी लग रही है तुम ठिठुरने जैसे और शब्द इस्तेमाल करके दिखाओ।

ठिठुरने का अभिनय

कक्षा में ठिठुरने का अभिनय करके दिखाओ। 'कविता के भीतर' शीर्षक वाले सवालों से लेकर 'किसकी-कैसी ज़िद' शीर्षक वाले सवालों तक सभी सवाल पढ़कर समझने, अनुमान लगाने, कल्पना करने, संदर्भ को विस्तार देने, तर्क करने, विश्लेषण और वर्गीकरण करने के कौशल का आकलन करने में सहायक हैं। इस कविता में एक बहुत बड़ी संभावना है– दूसरे विषयों के साथ एकीकृत करने की। कविता के कथ्य को पर्यावरण अध्ययन, गणित, कला के साथ बखूबी जोड़ा जा सकता है।

शेष सवालों के आधार पर विद्यार्थियों के भाषा और शब्दों के साथ तरह-तरह के खेल खेलने के कौशलों का आकलन कर सकते हैं, जैसे–'माँ से चाँद की बातचीत' वाले सवाल में कविता को संवाद रूप में लिखने के लिए कहा गया है। अब यह ज़रूरी नहीं कि सभी विद्यार्थियों का संवाद एक ही तरह से शुरू हो। इसलिए एक जैसे संवाद की अपेक्षा करना तो उचित नहीं होगा। अब किस विद्यार्थी के संवाद को कितने-कितने अंक दिए जाएँ, यह निर्भर करेगा–

- *क्या कविता के पात्र, भाव और कथ्य संवाद में उभर कर आ पा रहे हैं?*
- *क्या बच्चा अपनी बात समझा पाने में समर्थ है?*
- *क्या कुछ नए शब्दों (कविता से बाहर) का भी प्रयोग हुआ है?*
- *क्या संवाद में सरसता, चुटीलापन नज़र आ रहा है?*

इन सब (आप और भी सोच सकते हैं) के आधार पर आप तय कर पाएँगे कि विद्यार्थी का संवाद अधिकतम अंक के योग्य है या नहीं। आप वर्तनी/मात्राओं के प्रयोग को भी ध्यान में रखना चाहेंगे। इस संदर्भ में एक बात बहुत ही महत्वपूर्ण है कि मात्राओं की गलतियों के अंक काटने पर कहीं विद्यार्थी निरुत्साहित न हो जाएँ। कई बार एक ही मात्रा की बार-बार गलती पर हर बार अंक काटे जाते हैं जो निश्चित रूप से भाषा के आकलन के साथ न्याय नहीं होगा।

कहानी पढ़ना

क्या तुम मेरी माँ हो?

एक 'माँ चिड़िया' अपने अंडे पर बैठी थी। अचानक अंडा थोड़ा उछला।

"अरे वाह!" जल्दी ही अंडे में से मेरा बच्चा बाहर आएगा! फिर उसे ज़ोर की भूख लगेगी।

"मुझे अपने चूज़े के खाने के लिए कुछ लेकर आना चाहिए!" माँ चिड़िया ने कहा।

फिर माँ चिड़िया फुर्र से उड़कर चली गई। अंडा उछला। वो इतना उछला-कूदा, उछला-कूदा कि उसमें से चिड़िया का बच्चा बाहर निकल आया!

"मेरी माँ कहाँ है?" उसने कहा। उसने माँ को चारों तरफ़ खोजा। उसने ऊपर देखा। उसे माँ नहीं दिखी। उसने नीचे देखा। उसे माँ नहीं दिखी। "चलो, मैं माँ को जाकर ढूँढ़ता हूँ", उसने कहा। यह कह कर वह चल पड़ा।

वह पेड़ से गिरा और फिर नीचे, और नीचे

गिरता ही चला गया। चिड़िया का बच्चा अभी छोटा था। वह उड़ नहीं सकता था, पर वह चल सकता था। "चलो मैं अपनी माँ को तलाशने निकलता हूँ", उसने कहा।

उसने माँ को पहले कभी नहीं देखा था। वह अपनी माँ को पहचानता भी न था। चलते-चलते वह अपनी माँ के पास से गुज़रा। परंतु उसने अपनी माँ को नहीं पहचाना।

फिर वह एक छोटी बिल्ली के पास पहुँचा। "क्या तुम मेरी माँ हो?" उसने बिल्ली से पूछा। बिल्ली बस उसे टकटकी लगाए घूरती रही। उसने कुछ नहीं कहा। बिल्ली उसकी माँ नहीं थी, इसलिए चिड़िया का बच्चा आगे बढ़ा।

फिर वह एक मुर्गी के पास पहुँचा। "क्या तुम मेरी माँ हो?" उसने मुर्गी से पूछा। "नहीं,'' मुर्गी ने जवाब दिया।

छोटी बिल्ली उसकी माँ नहीं थी।

मुर्गी भी उसकी माँ नहीं थी।

इसलिए चिड़िया का बच्चा आगे बढ़ा। "मुझे अपनी माँ को खोजना है।" उसने कहा।

फिर वह एक कुत्ते के पास जा पहुँचा। "क्या तुम मेरी माँ हो?" उसने कुत्ते से पूछा। "मैं तुम्हारी माँ नहीं हूँ। मैं कुत्ता हूँ", कुत्ते ने जवाब दिया।

छोटी बिल्ली उसकी माँ नहीं थी।

मुर्गी भी उसकी माँ नहीं थी।

कुत्ता भी उसकी माँ नहीं था। इसलिए चिड़िया का बच्चा फिर आगे बढ़ा।

उसे एक गाय मिली।

"क्या तुम मेरी माँ हो?" उसने गाय से पूछा।

"मैं तुम्हारी माँ कैसे हो सकती हूँ? मैं एक गाय हूँ।" गाय ने कहा।

छोटी बिल्ली और मुर्गी उसकी माँ नहीं थी।

कुत्ता और गाय भी उसकी माँ नहीं थे।

क्या उसकी माँ थी भी?

"मेरी माँ थी", "मुझे यह पक्का पता है। मुझे उसे खोजना ही पड़ेगा। मैं उसकी अवश्य तलाश करूँगा। पक्का!" चिड़िया के बच्चे ने कहा।

अब चिड़िया के बच्चे ने चलना छोड़ दिया। वह दौड़ने लगा। उसे एक टूटी-फूटी मोटरकार दिखाई दी।

क्या मोटरकार उसकी माँ हो सकती थी? नहीं, यह संभव नहीं था। चिड़िया का बच्चा रुका नहीं। तेज़ी से दौड़ता रहा।

फिर उसने नीचे की ओर झुककर देखा। उसे एक नाव दिखाई पड़ी। नाव को देखकर उसने कहा, "वह रही मेरी माँ!" वह नाव की तरफ देखकर चिल्लाया, परंतु नाव रुकी नहीं। नाव चलती ही गई।

फिर उसने सिर ऊपर उठाकर देखा। उसे एक बड़ा हवाई जहाज़ दिखाई दिया। "माँ, मैं यहाँ पर हूँ। वह चिल्लाया। परंतु हवाई जहाज़ नहीं रुका। वह उड़ता चला गया। तभी चिड़िया के बच्चे को बड़ी-सी चीज़ दिखाई दी। यह ज़रूर उसकी माँ होगी। "माँ वहाँ है! वह मेरी माँ है!" वह चिल्लाया। और दौड़कर उसके एकदम पास आया।

"माँ, माँ! मैं यहाँ हूँ माँ!" उसने उस बड़ी मशीन से कहा। परंतु उस बड़ी मशीन

से केवल "भप्प" की ज़ोरदार आवाज़ आई। "तो तुम भी मेरी माँ नहीं हो", चिड़िया के बच्चे ने कहा।

"तुम तो एक बड़ी मशीन हो। मुझे यहाँ से निकलना चाहिए!" परंतु चिड़िया के बच्चे के लिए वहाँ से भागना मुश्किल हो गया। तुरंत बड़ी मशीन ऊपर उठी। वह ऊपर, और ऊपर उठी। और उसके साथ-साथ चिड़िया का बच्चा भी ऊपर और ऊपर उठा।

पर देखो वह बड़ी मशीन अब कहाँ जा रही है? "अरे, बाप रे!" यह बड़ी मशीन अब मेरे साथ क्या करेगी?

मुझे यहाँ से जल्दी निकालो!"

बस तभी वह बड़ी मशीन रुक गई।

"मैं कहाँ हूँ?" चिड़िया के बच्चे ने कहा।

"मैं अब घर जाना चाहता हूँ। मुझे अपनी माँ चाहिए।"

तभी कुछ हुआ। बड़ी मशीन ने चिड़िया के बच्चे को उठाकर उसे वापिस घोंसले में रख दिया।

चिड़िया का बच्चा अंत में अपने घर सुरक्षित पहुँच गया। बस तभी माँ चिड़िया भी पेड़ पर वापिस आई।

"क्या तुम्हें पता है कि मैं कौन हूँ?" उसने अपने बच्चे से पूछा।

"हाँ मुझे मालूम है कि तुम कौन हो," चिड़िया के बच्चे ने जवाब दिया।

"तुम छोटी बिल्ली नहीं हो। तुम मुर्गी नहीं हो। तुम कुत्ता नहीं हो। तुम गाय नहीं हो। तुम नाव नहीं हो, न ही तुम हवाई जहाज़ हो, न ही तुम बड़ी मशीन हो! तुम एक चिड़िया हो, और तुम मेरी माँ हो।"

आकलन

कहानी की विषय-वस्तु बच्चों की मनपसंद है, क्योंकि अपनी माँ हर बच्चे को अच्छी लगती है। कहानी सुनाने के बाद आकलन के लिए अभ्यास बनाते समय यह बात ध्यान में रखें कि अभ्यासों में विविधता हो। अभ्यास कहानी की समझ, बच्चों में भाषायी कौशलों को आँकने के साथ अन्य कई बातें भी जानने में सहायक हों। अभ्यासों के शीर्षक भी मज़ेदार दें ताकि शीर्षक पढ़ते ही बच्चों को आनंद मिले तथा वे खुश होकर आकलन की प्रक्रिया में भाग लें। सबसे पहले बोध प्रश्न दें ताकि इस बात का आकलन हो सके कि बच्चे ने पाठ पढ़कर कहाँ तक समझा है?

क्यों

- छोटी बिल्ली ने चूज़े की बात का ज़वाब क्यों नहीं दिया होगा? वह चूज़े को क्यों घूर रही होगी?
- अंडे से निकलने के बाद चूज़े को उसकी माँ क्यों नहीं मिली?
- चिड़िया का बच्चा उड़ क्यों नहीं सकता था?
- ऐसे कौन-कौन से काम हैं जो तुम पहले नहीं कर पाते थे, पर अब अपने-आप कर लेते हो?
- चूज़ा मोटरकार को देखते ही कैसे समझ गया कि यह उसकी माँ नहीं हो सकती?

सोचो

- *''मुझे पक्का पता है कि मेरी माँ थी।" चूज़े ने कहा। चूज़े को कैसे पता था कि उसकी माँ थी। वह तो अब तक अंडे में था।*
- *जब बहुत देर तक चूज़े को उसकी माँ नहीं मिली तो वह दौड़ने लगा। दौडते-दौड़ते वह क्या सोच रहा होगा?*

बोध प्रश्नों के जवाबों द्वारा आप बच्चों के पठन कौशल का आकलन कर सकेंगे। अब आप यह जान सकेंगे कि उन्होंने पाठ को कहाँ तक समझा है। आकलन के लिए ऐसे प्रश्न दें जिनमें बच्चों को सोचने, कल्पना करने, अनुमान लगाने का मौका मिले।

इन प्रश्नों के उत्तर बच्चे अपने अनुमान तथा अनुभव के आधार पर देंगे। इनके उत्तर बच्चे अपने-अपने अंदाज़ में देंगे। आप किसी एक सर्वमान्य उत्तर की अपेक्षा न करें। बच्चा अपनी समझ, अपनी भाषा में जो भी उत्तर दे उसे स्वीकार करें।

कहानी सुनने के समान ही कहानी बनाना भी बच्चों को बहुत अच्छा लगता है। आकलन में बच्चों को कहानी बनाने के लिए भी दें। इससे बच्चे की रचनात्मकता का विकास होगा। उदाहरण के लिए कहानी दी जा रही है–

चूज़े की कहानी

चिड़िया को तो पता भी नहीं चला कि उसके पीछे से चूज़ा कहाँ-कहाँ भटकता रहा। बताओ, चूज़े ने अपनी माँ को अपनी कहानी कैसे सुनाई होगी? फिर माँ ने उसे क्या कहा होगा?

बच्चा जब इस सवाल के जवाब में चूज़े की कहानी सुनाएगा तो आप यह आकलन कर सकेंगे कि उसके बोलने का कौशल कहाँ तक विकसित हुआ है। कहाँ उसे दिक्कत आ रही है। उसकी कल्पना शक्ति को भी आप आँक सकेंगे।

- बच्चों से ऐसे सवाल जरूर करें जिनमें उन्हें बाहरी दुनिया से संपर्क करने के अवसर मिलें, जैसे–चिड़िया के बच्चे को चूज़ा कहते हैं। कुत्ते गाय और भैंस के बच्चों को क्या कहते हैं? अपने आसपास पता करो।

इस अभ्यास के जवाब के लिए बच्चे अपने साथियों तथा अन्य लोगों से बात करेंगे। इसके द्वारा आप बच्चे के बोलने के कौशल तथा लेखन कौशल का आकलन कर सकेंगे।

बच्चे के अनुभव पर आधारित सवाल ज़रूर दें। अनुभव से जुड़े सवाल बच्चों में रोमांच तथा लिखने का उत्साह जगाते हैं।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 भी सिफ़ारिश करती है कि कक्षा को बाहर की दुनिया से जोड़ें।

भूख

माँ चिड़िया ने कहा, "जल्दी ही अंडे में से मेरा बच्चा बाहर आएगा। फिर उसे ज़ोर की भूख लगेगी।" तुम्हें कब-कब बहुत ज़ोर की भूख लगती है?

इस प्रकार के सवाल हर बच्चे को जवाब देने को प्रेरित करेंगे। आपको इस बात की जानकारी हो जाएगी कि बच्चे ने बोलने में कुशलता किस सीमा तक प्राप्त की है।

- आकलन के समय अभ्यासों में बच्चों को अपने आसपास की दुनिया को समझने के लिए अवलोकन के अवसर दें, जैसे–

ऊपर-नीचे

चूज़े ने ऊपर देखा, उसे माँ नहीं दिखी।
चूज़े ने नीचे देखा, उसे माँ नहीं दिखी।
तुम भी ऊपर और आसपास देखो। क्या-क्या दिखाई दिया?
उनके नाम यहाँ लिखो–
ऊपर _____
आसपास _____

इस अभ्यास से आप बच्चों के अवलोकन कौशल की जाँच कर सकेंगे। लेखन क्षमता का भी आकलन कर सकेंगे।

- भाषा का नाद सौंदर्य बच्चों को बहुत अच्छा लगता है। ऐसे अभ्यास दें जिनमें बच्चे मिलती-जुलती ध्वनि वाले, तुकांत शब्द सुनें-सुनाएँ, जैसे–छोटी बिल्ली टकटकी लगाए चूज़े को देखती रही। नीचे टकटकी की आवाज़ से मिलते-जुलते शब्द लिखे हैं। इनका इस्तेमाल करते हुए वाक्य बनाकर अपने दोस्तों को वाक्य सुनाओ–

(क) टकटकी (घ) अटपटी
(ख) चटपटी (ङ) कटकटी
(ग) फटफटी (च) भटभटी

इस अभ्यास में बच्चों को दिए गए शब्दों से वाक्य बनाने हैं। इस प्रकार के अभ्यास से आप बच्चों के वाक्य-संरचना कौशल तथा बोलने के कौशल का आकलन कर सकेंगे।

- अलग-अलग तरह की आवाज़ें बच्चों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं। इनसे जुड़े सवाल भी दें–

आवाज़ें

मशीन से आवाज़ आई–भप्प!

सोचो और बताओ, और किन-किन चीज़ों से ऐसी आवाज़ निकलती है?

इस सवाल में बच्चों के पास सोचने का भरपूर मौका है। बच्चे जवाब में अलग-अलग चीज़ों के नाम बताएँगे, इससे उनके बोलने के कौशल का आकलन आप कर सकेंगे।

भाषायी कौशलों के साथ वर्गीकरण के कौशल के लिए इस प्रकार के अभ्यास दिए जा सकते हैं।

लिखो सही जगह पर

कुत्ता, बिल्ली, गाय जानवर हैं।

चिड़िया, मुर्गी पक्षी हैं।

नाव, हवाई जहाज़, क्रेन चीज़ें हैं।

- बताओ, नीचे लिखे नाम इनमें से क्या हैं? उन्हें सही जगह पर लिखो। जो नाम इन तीनों जैसे न लगें, उन्हें अलग खाने में लिखो–

पेंसिल, पंखा, मोर, चूहा, पेड़, पत्थर, कॉपी, हाथी, केंचुआ, मच्छर, तितली, ऐनक, कबूतर, कोयल, शेर, घोड़ा, मगरमच्छ, साँप, गुलाब

पशु	पक्षी	चीज़ें	कुछ और

इस अभ्यास के द्वारा आप यह जान पाएँगे कि क्या बच्चा जानवर, पक्षी तथा अन्य चीज़ों का वर्गीकरण कर पा रहा है? अलग-अलग खानों में बच्चों द्वारा लिखे गए नामों से उनके लेखन कौशल का भी आकलन आप कर पाएँगे?

- भाषा शिक्षण के समय आकलन के दौरान भाषा संबंधी कौशलों के साथ विश्लेषण करने की क्षमता का आकलन भी करें, जैसे–

अंतर बताओ

चूज़े की माँ बाकी सबसे अलग थी। बताओ, उसमें और बाकी जानवरों में क्या अंतर था?

	चिड़िया	गाय	मुर्गी
पैर			
पंख			
पूँछ			
मुँह			
रंग			
आकार			

यह अभ्यास बच्चों के लिए सरल तथा रोचक है। इससे आप बच्चों की अलग-अलग चीज़ों में अंतर पहचानने की क्षमता का आकलन कर सकेंगे। बच्चों ने लेखन में कहाँ तक कुशलता प्राप्त की है, इसकी जाँच भी आप कर सकेंगे।

सुनकर लिखो

बच्चों के साथ मिलकर उनकी कॉपी या कागज़ पर एक ऐसा वर्ग बनाएँ जिसमें कुल 16 खाने हों। खाने इतने बड़े हों कि बच्चे उसमें आसानी से चार अक्षर वाले शब्द भी लिख सकें। बच्चों से कहें कि–

- मौखिक रूप से दिए गए निर्देश को ध्यान से सुनें।
- सुनकर वर्ग में शब्द लिखें।

कुछ निर्देश इस तरह दिए जा सकते हैं–

- पहली पंक्ति के पहले खाने में अपना नाम लिखो।
- दूसरी पंक्ति के तीसरे खाने में अपनी मनपसंद मिठाई का नाम लिखो।
- तीसरी पंक्ति के आखिरी खाने में अपने दोस्त का नाम लिखो।
- चौथी पंक्ति के पहले खाने में सूरज का चित्र बनाओ, आदि।

सलोनी			
		जलेबी	
			नेहा
❁			

यह गतिविधि न केवल रोचक है बल्कि अनौपचारिक रूप में सहज भाव से बच्चों द्वारा सुनकर समझना और लेखन कुशलता का आकलन करने में सहायक है। आप अपनी

कक्षा तथा बच्चों को ध्यान में रखते हुए आवश्यक संशोधन कर सकते हैं, जैसे–

- केवल शब्द लिखना,
- केवल सरल चित्र बनाना,
- शब्द और चित्र दोनों शामिल करना,
- केवल 12 खानों का वर्ग,
- निर्देशों की संख्या आदि।

ऊँट और सूअर

एक दिन एक ऊँट सड़क पर चला जा रहा था। उसने एक सूअर को देखा। यह पहली बार था जब उसने सूअर को देखा। उसने सूअर को देखा तो उसे हँसी आ गई। वह समझ नहीं पा रहा था कि एक जानवर इतना नाटा कैसे हो सकता है। "मुझे देख," उसने सूअर से कहा, "मैं लंबा और तगड़ा हूँ। कितना अच्छा है लंबा होना! तू बहुत नाटा है यह दुःख की बात है।" यह सुनकर सूअर को गुस्सा आ गया। उसने ऊँट को घूरकर देखा और कहा, "मैं नाटा हूँ, तू बहुत लंबा है, यह दुःख की बात है।" ऊँट ने कहा, "तू मेरे साथ चल, मैं तुझे दिखाऊँगा कि लंबा होना कितना अच्छा है, नाटा होना कितना बुरा। मैं जीत जाऊँगा। यदि मैं हार जाऊँगा तो मैं अपनी कूबड़ तुझे दे दूँगा।"

दोनों एक साथ आगे चल पड़े। रास्ते में उन्हें एक बाग दिखाई पड़ा। बाग की चारदीवारी काफ़ी ऊँची थी, और कोई फाटक नहीं था। वे अंदर नहीं जा सके। बाग में अनेक सुंदर पेड़-पौधे थे। ऊँट ने सिर ऊपर उठाकर पेड़-पौधों को देखा। सूअर भी रुक गया। ऊँट ने सिर बढ़ाकर भर-पेट पत्ते खा लिए। सूअर पत्तों तक पहुँच नहीं सकता था, इसलिए भूखा ही रह गया।

ऊँट ने हँसकर कहा, "क्या सोच रहा है, मित्र? क्या तू मेरे जैसा लंबा होना नहीं चाहता?"

सूअर ने कहा, "मैं भी तुझे दिखाऊँगा कि छोटा होना अच्छा है। चलो, हम आगे बढ़ें!"

वे सड़क पर आगे बढ़ते गए।

जल्दी ही वे एक दूसरे बाग में पहुँचे जिसकी चारदीवारी काफ़ी ऊँची थी, लेकिन एक छोटा-सा फाटक था।

सूअर उस फाटक से अंदर घुस गया और ताज़ी और स्वादिष्ट सब्ज़ी खाने लगा। ऊँट अंदर नहीं जा पाया। वह बाहर आया और बोला, "क्या सोच रहा है, ऊँट भैया? तू भी छोटा होना चाहता है?"

दोनों साथ बैठ गए और सोचने लगे। वे एक-दूसरे पर हँसने लगे। दोनों समझ गए कि वे गलतफ़हमी में थे। कभी लंबू होने में फ़ायदा है, और कभी फ़ायदा नाटू होने में है।

तब ऊँट ने अपना कूबड़ और सुअर ने अपना थूथन अपने पास रख लिया।

ज़ाहिर सी बात है कि पहले आप संक्षेप में कहानी सुनाएँगे। आकलन की प्रक्रिया यहीं से शुरू हो जाती है। आपके पास आकलन में कुछ बिंदु जरूर होंगे, जैसे–

- पढ़ने का कौशल,
- पढ़कर समझने का कौशल,
- विद्यार्थी कहानी के पात्रों के बारे में कितना समझ पाए हैं,
- कहानी में आई घटनाओं को आपस में और अपने जीवन से कितना जोड़ पाते हैं,
- कहानी को अपने शब्दों और अपनी तरह से कह पाने का कौशल,
- वर्णन करने, सार बता पाने और निष्कर्ष निकालने का कौशल,
- कल्पना करने, अनुमान लगाने का कौशल,
- शब्द संपदा में वृद्धि करने और सही उच्चारण करने का कौशल,
- कहानी के आधार पर व्याकरण, भाषा संरचना को समझने का कौशल,
- लिखने का कौशल।

आपके विचार से और भी कौशल, दक्षताएँ होंगी जिनका आप आकलन करना चाहेंगे। अब आप विचार करेंगे कि किन-किन तकनीकों को आधार बनाया जाए? कुछ प्रश्न आप मौखिक रूप से पूछेंगे, कुछ सवालों के लिए आप समूह में चर्चा करवाना पसंद करेंगे, कुछ सवालों के उत्तर आप लिखित रूप से चाहेंगे, कहीं-कहीं ऐसी भी स्थिति होगी कि आप अवलोकन करके जानना चाहेंगे कि बच्चे चर्चा में किस तरह भाग ले रहे हैं। सवालों के उत्तर खोजने के लिए किस तरह की चेष्टाएँ कर रहे हैं आदि।

अब आपके सामने कुछ प्रश्न हैं–

- सूअर में ऐसी क्या बात थी जो उसे देख ऊँट को हँसी आ गई?
- ऊँट को सूअर के छोटे कद पर अचरज क्यों हुआ?
- सूअर को ऊँट की किस बात पर गुस्सा आया?
- सूअर की नज़र में ऊँट का ऊँचा होना दु:ख की बात क्यों थी?
- ऊँट और सूअर ने एक-दूसरे के सामने किस तरह की शर्त रखी?
- सूअर बाग में लगे पेड़-पौधों के पत्ते नहीं खा पाया, क्योंकि (किसी एक पर (3) का निशान लगाओ।)
  - उसे पत्ते खाना बिलकुल अच्छा नहीं लगता।
  - पत्ते बहुत ऊँचाई पर थे, वह उन तक पहुँच नहीं सका।
  - उसे बाग के मालिक का डर सता रहा था।
- ऊँट को पत्ते खाने में आसानी क्यों हुई? ऊँट के लिए पत्ते खाना आसान किस प्रकार से था?
- ऊँट और सूअर दोनों ही किसी गलतफ़हमी में थे। 'गलतफ़हमी' का मतलब है बात को सही तरह से न समझ पाना या फिर बात समझने में किसी तरह का धोखा होना। ऊँट और सूअर को अपने-अपने कद को लेकर किस तरह की गलतफ़हमी थी?
- कहानी के आखिर में दोनों किस नतीजे पर पहुँचे? तुम उन दोनों की बात से सहमत हो या नहीं? अपनी बात को कारण के साथ समझाओ।

इस प्रश्न का उत्तर पाने के लिए विद्यार्थियों के दो-दो के समूह बनवाएँ। वे समूह में चर्चा करेंगे और उस आधार पर अपना उत्तर देंगे। यहाँ पर आप उनकी आपस में बातचीत कर किसी नतीजे पर पहुँचने के कौशल को विकसित करने के अवसर तो दे ही रहे हैं और साथ-साथ आकलन भी कर रहे हैं।

सोचकर बताओ

- शर्त हारने की स्थिति में ऊँट ने सूअर को अपना कूबड़ ही देने की क्यों सोची होगी?
- पत्ते बहुत ऊँचाई पर थे, इसलिए सूअर पत्ते नहीं खा सका। फाटक बहुत छोटा था, इसलिए ऊँट सब्ज़ियाँ नहीं खा सका।

- ऊँट चाहता है सूअर भी पत्ते खाए। सूअर चाहता है ऊँट भी सब्ज़ियाँ खाए। दोनों एक-दूसरे की किस तरह मदद कर सकते हैं?
- किसी ने आपके साथ मज़ा लेने के लिए आपका बैग किसी ऊँची जगह पर रख दिया है। उसे खुद उतारने के लिए आप क्या-क्या प्रयास कर सकते हैं?

क्या कर सकते हैं

ऊँट को अपने कूबड़ से और सूअर को अपने थूथन से कई बार परेशानी होती है। लेकिन कुछ लोगों को अपने किसी अंग के न होने पर कई प्रकार की परेशानियाँ होती हैं। बच्चों को इन लोगों के प्रति संवेदनशील बनाना भी शिक्षा का एक उद्देश्य है। आकलन के दौरान भी इनसे संबंधित सवाल पूछे जा सकते हैं। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा प्रकाशित हिंदी की कक्षा 4 की पाठ्यपुस्तक *रिमझिम भाग 4* में से इसी तरह की संवेदनशीलता के उदाहरण प्रस्तुत हैं–

मैं भी कुछ कर सकती हूँ–

- यदि सुनीता तुम्हारी पाठशाला में आए तो उसे किन-किन कामों में परेशानी आएगी?
- उसे यह परेशानी न हो इसके लिए अपनी पाठशाला में क्या तुम कुछ बदलाव सुझा सकती हो?

मेरा आविष्कार

सुनीता जैसे कई बच्चे हैं। इनमें से कुछ देख नहीं सकते तो कुछ बोल या सुन नहीं सकते। कुछ बच्चों के हाथों में परेशानी है, तो कुछ चल नहीं सकते।

तुम ऐसे ही किसी एक बच्चे के बारे में सोचो। यदि तुम्हें कोई शारीरिक परेशानी है, तो अपनी चुनौतियों के बारे में भी सोचो। उस चुनौती का सामना करने के लिए तुम क्या आविष्कार करना चाहोगे? उसके बारे में सोचकर बताओ कि–

- तुम वह कैसे बनाओगे?
- उसे बनाने के लिए किन चीज़ों की ज़रूरत होगी?
- वह चीज़ क्या-क्या काम कर सकेगी?
- उस चीज़ का चित्र भी बनाओ।

चारदीवारी क्या और क्यों?

"बाग की चारदीवारी काफ़ी ऊँची थी।"

- 'चारदीवारी' का मतलब है– चारों तरफ़ दीवार। बाग के चारों तरफ़ दीवार क्यों बनवाई गई होगी?
- आपके विद्यालय के चारों तरफ़ भी दीवार होगी। यहाँ चारदीवारी क्यों बनवाई गई होगी?
- 'चारदीवारी' मतलब 'चार तरफ़ दीवार'। अब आप कुछ ऐसे शब्द सुझाएँ जिसमें 'चार' की बात ज़रूर आए। आपकी सुविधा के लिए एक शब्द दे रहे हैं–
  चौमासा–चार महीने।

सबकी अपनी-अपनी खास बातें

ताज़ी सब्ज़ियाँ
नाटा सूअर

यहाँ पर 'ताज़ा' शब्द सब्ज़ियों की और 'नाटा' शब्द सूअर की किसी खास बात की ओर इशारा कर रहे हैं। ऐसे शब्दों को 'विशेषण' कहते हैं। नीचे लिखे शब्दों के आगे आप भी कुछ ऐसे शब्द लिखें जिससे उनकी खास बात पता चले–

परी .....
हाथी .....
बस्ता .....
चारदीवारी .....
सड़क .....
फाटक .....

चंद्रबिंदु का कमाल

नीचे दो-दो शब्द लिखे हैं। दोनों को बोलकर पढ़ो–

ऊट, ऊँट
हस, हँस

ऊट को ऊँट बोलते हुए और हस को हँस बोलते हुए तुम्हें फ़र्क नज़र आ रहा होगा। नीचे लिखे शब्दों पर जहाँ ठीक समझो 'ँ' लगाओ–

फस गया, चाद, बाग, पूछ लंबी थी। वह कुछ पूछना चाह रही थी। कटोरी कासे की थी। सास ज़ोर-ज़ोर से चल रही थी, उसकी सास बहुत अच्छी थी। बास बहुत लंबा था, भोजन बासी था। मुझे खासी आ रही है, खास बात क्या है?

एक के दो-दो अर्थ

यदि मैं हार जाऊँगा तो मैं .....
मैं तुझे गले में हार पहनाऊँगा।

दोनों ही वाक्यों में 'हार' शब्द आया है पर दोनों के अर्थ अलग-अलग हैं। आप भी इसी तरह के चार शब्द सुझाएँ और वाक्यों में भी लिखें।

अब जो भी सवाल आए हैं उनका एक ही उत्तर हो ऐसा संभव नहीं। इसलिए अपना एक उत्तर तय कर लेना और अपेक्षा करना कि विद्यार्थी भी वैसा ही उत्तर दें, उचित नहीं होगा। आप विद्यार्थी की कल्पनाशीलता, तार्किक क्षमता, अनुमान कर पाने की क्षमता फिर उसके आधार पर जवाब दे पाने की तत्परता का आकलन कर रहे हैं, इसलिए उनके उत्तर को महत्त्व देना बहुत ज़रूरी हो जाता है।

बैग को उतारने वाले सवाल के जवाब के लिए आप उनसे क्रिया करके यानी कि करके दिखाने फिर उस क्रिया को अपने शब्दों में बताने के लिए कह सकते हैं।

चंद्रबिंदु वाले सवाल में ज़रूरी होगा कि लेखन के साथ-साथ उच्चारण के भी अवसर दिए जाएँ तभी सही मायने में आकलन संभव हो पाएगा।

कल्पना करके लिखो

- यह पहली बार था जब

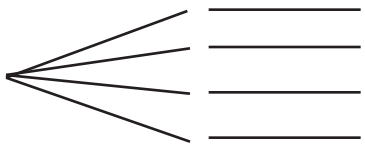

- 'ऊँट और सूअर' कहानी लेखक ने कही है। अगर यही कहानी ऊँट सुनाता तो कैसे सुनाता। ऊँट की नज़र से इस कहानी को

सुनाओ जैसे–एक बार मैं सड़क पर चला जा रहा था–

- यह कहानी एक ख़ास तरीके से खत्म होती है। दोनों एक साथ आगे चल पड़े। .... इससे आगे की कहानी तुम बनाओ और कहानी का कोई दूसरा अंत सोचो।

क्लोज़ टेस्ट

समग्र निपुणता कैसे मापी जाए?/सभी भाषायी आयामों का आकलन

बच्चे की समग्र यानी हर तरह की निपुणता के स्तरों को मापने के लिए क्लोज़ टेस्ट एक प्रभावशाली तरीका है।

क्लोज़ प्रक्रिया (The Cloze Procedure)

भाषायी निपुणता जानने के लिए यह टेस्ट या जाँच का एक सुस्थापित तरीका है। क्लोज़ टेस्ट में विद्यार्थियों को कोई भी पाठ्य सामग्री पढ़ने के लिए दी जाती है। पढ़ने के लिए देने से पहले प्रत्येक वाक्य का कोई-सा शब्द, आमतौर पर पाँचवाँ या सातवाँ शब्द हटा दिया जाता है। विद्यार्थी से यह अपेक्षा की जाती है कि वह पूरी पाठ्य-सामग्री को पढ़े और हटाए गए शब्दों के स्थान पर, जो रिक्त स्थान के रूप में हैं, अपनी समझ से शब्द सुझाए।

विद्यार्थी रिक्त स्थानों की पूर्ति के लिए भाषा विज्ञान से जुड़े ज्ञान/भाषायी ज्ञान, पाठ से जुड़े संदर्भों की समझ तथा व्यावहारिक जगत की समझ को आधार बनाएँगे। पाठ्य-सामग्री में से शब्दों को हटाने के दो तरीके हैं–

- हरेक-वाँ शब्द (उदाहरण के तौर पर पाँचवाँ या सातवाँ शब्द) हटा दिया जाता है। इसे *निश्चित/नियत अनुपात विधि* कहा जाता है।
- *भिन्नात्मक आनुपातिक* विधि में शब्दों को हटाने के लिए कुछ ख़ास किस्में तय कर ली जाती हैं जैसे–भूतकाल वाली क्रियाएँ।

सामान्यतया पहले तरीके के उपयोग का अधिक प्रचलन है। भिन्नात्मक आनुपातिक विधि का उपयोग उन स्थितियों में अधिक लाभकारी है जब भाषा के किसी विशेष आयाम की परीक्षा करनी है।

यह देखा गया है कि जो बच्चे क्लोज़ टेस्ट में निपुणता दिखाते हैं वे भाषा के हर पहलू में अच्छा कर सकते हैं। वे प्रभावशाली प्रदर्शन करते हैं। ऐसे बच्चों में अन्य विषयों में कुछ बेहतर प्रदर्शन की संभावनाएँ नज़र आती हैं। आखिरकार कुछ भी सीखने के लिए भाषा की जानकारी, समझ और निपुणता महत्वपूर्ण है। यहाँ क्लोज़ टेस्ट का उपयोग सीखने-सिखाने के उपकरण के रूप में किया गया है।

क्लोज़ टेस्ट बनाना बहुत ही आसान है। किसी भी गद्य या पद्य पाठ्य-सामग्री का कोई-सा भी अंश चुन सकते हैं। अंश रुचिकर हो, चुनौतीपूर्ण हो। पहले और आखिरी वाक्य को ज्यों-का-त्यों रहने दीजिए। उस शब्द के स्थान पर यानी कि खाली जगह पर रेखा/लाइन खींचिए। हर वाक्य में जो भी सातवाँ शब्द हटेगा, रिक्त स्थान दर्शाने वाली रेखा (लाइन) की लंबाई एक-सी ही होनी चाहिए। उदाहरण के तौर पर

पहले वाक्य में 'बैठा' शब्द हटाया है और दूसरे वाक्य में 'से' शब्द हटाया है। 'बैठा' शब्द 'से' की अपेक्षा अधिक जगह घेरता है पर रिक्त स्थान दर्शाने वाली लाइन दोनों ही स्थानों पर बराबर आकार की होगी। इसके नियम के पीछे तथ्य यह है कि बच्चे कम या ज़्यादा जगह के आधार पर शब्दों का अनुमान न लगाने पाएँ।

बच्चों को खाली स्थान वाला अंश पढ़ने के लिए दें। उन्हें बताएँ–

- *दिए गए अंश को दो बार जरूर पढ़ें।*
- *खाली स्थान को तभी भरें जब आप इसे तीसरी बार पढ़ रहे हों।*
- *हर खाली स्थान में केवल एक ही शब्द भरें।*

क्लोज़ टेस्ट के लिए दिए गए खंड में कम-से-कम बीस रिक्त स्थान तो होने ही चाहिए। इस प्रकार से देखा जाए तो उस खंड में कम-से-कम 160-170 शब्द तो ज़रूर होंगे ही/होने चाहिए।

इस टेस्ट का इस्तेमाल तीसरी कक्षा से शुरू किया जा सकता है। जैसे-जैसे बच्चे अभ्यस्त होने लगें, कठिनता के स्तर तथा खंड की लंबाई को बढ़ाया जा सकता है। आप इस बात को ज़रूर महसूस करेंगे कि क्लोज़ टेस्ट प्रक्रिया को कक्षा 1 और 2 में भी किसी-न-किसी रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है।

क्लोज़ टेस्ट का अंकन (स्कोरिंग) करने के बहुत-से तरीके हैं। पहले तरीके में तो केवल उन्हीं शब्दों को सही माना जाता है जो मूल पाठ्य-सामग्री में मौजूद हैं। दूसरे तरीके में उन शब्दों को भी सही मान लिया जाता है जो मूल खंड में मौजूद नहीं हैं पर संदर्भ से मेल खाते हैं। बहुत से भाषा वैज्ञानिक पहले ही तरीके को सही मानते हैं। क्लोज़ टेस्ट का एक उदाहरण प्रस्तुत है–

गोदाम दोबारा कब जलेगा

एक बार किसी कारण से एक गोदाम में अचानक आग लग गई। उसमें हज़ारों रुपए के आलू भरे पड़े थे। उस गोदाम का मालिक अपना माल जलता देख अपना सिर पीटता एक तरफ खड़ा था। पास-पड़ोस के लोग आग बुझाने का प्रयत्न कर रहे थे।

संयोग से उसी समय उस रास्ते से गोपाल भांड़ आ निकले। वह किसी काम से कहीं जा रहे थे। सामने गोदाम जलता देखकर वह वहाँ रुक गए और पास की ही एक मोची की दुकान से नमक माँगकर गोदाम के अधजले आलू बड़े स्वाद से खाने लगे। वहाँ उन्होंने इतने आलू खाए कि उनका पेट भर गया। फिर पेट पर हाथ फेरते हुए उन्होंने एक डकार ली और उस मोची से ही एक लोटा जल माँग कर पीया। इसके बाद एक किनारे गोदाम के मालिक को सिर थामकर बैठे देखा तो उसके पास जाकर बोले, "क्यों दादा! सिर पकड़कर क्यों बैठे हो? यह क्या इस तरह मुँह लटकाकर बैठने का समय है?"

गोदाम का मालिक चिढ़कर बोला, "जिसका जाता है, वही जानता है। मुझे क्या करना चाहिए और क्या नहीं इसे तुम्हारे जैसे पेटू नहीं समझेंगे। जाओ, पेट भरने से कोई कोना खाली रहा हो तो पचीस-पचास आलू और खा लो और अपना रास्ता नापो।"

गोपाल भांड़ समझ गए कि गोदाम के मालिक को उनका आलू खाना बिल्कुल अच्छा नहीं लगा है। वह गोदाम के मालिक के निकट आकर बोले, "अच्छा तब तो ठीक-ठीक खबर आप ही दे सकते हैं।"

"कैसी खबर?" गोदाम के मालिक ने झल्लाकर पूछा।

"यही कि इस बार का कोटा तो पूरा कर लिया है, अब गोदाम में दोबारा आग कब लगेगी जिससे फिर आलू खाने आऊँ।" गोपाल भांड़ ने हँसकर कहा और अपने रास्ते पर आगे बढ़ गए।

बच्चों से उपर्युक्त गद्यांश पर आधारित निम्नलिखित गतिविधियाँ करवाई जा सकती हैं–

1. *मूल गद्यांश को पढ़ना,*
2. *रिक्त स्थानों पर संदर्भ के अनुसार उचित शब्द लिखना,*
3. *कहानी को अपने शब्दों में लिखना,*
4. *प्रश्न बनाना,*
5. *बच्चों द्वारा सुझाए गए शीर्षकों पर चर्चा करना।*

गतिविधि-1 रिक्त स्थान की पूर्ति

एक बार किसी कारण से एक गोदाम में अचानक आग लग गई। उसमें हज़ारों रुपए के आलू भरे पड़े थे। उस गोदाम का मालिक अपना माल (1) ..... देख अपना सिर पीटता एक तरफ (2) ..... था। पास-पड़ोस के लोग आग बुझाने (3) ..... प्रयत्न कर रहे थे।

संयोग से (4) ..... समय उस रास्ते से गोपाल भांड़ (5) ..... निकले। वह किसी काम से कहीं (6) ..... रहे थे। सामने गोदाम जलता देखकर (7) ..... वहाँ रुक गए और पास की (8) ..... एक मोची की दुकान से नमक (9) ..... गोदाम के अधजले आलू बड़े स्वाद (10) ..... खाने लगे। वहाँ उन्होंने इतने आलू (11) ..... कि उनका पेट भर गया। फिर (12) ..... पर हाथ फेरते हुए उन्होंने एक (13) ..... ली और उस मोची से ही (14) ..... लोटा जल माँगकर पीया। इसके बाद (15) ..... किनारे गोदाम के मालिक को सिर (16) ..... बैठे देखा तो उसके पास जाकर (17) ..... "क्यों दादा! सिर पकड़कर क्यों बैठे (18) .....? यह क्या इस तरह मुँह लटकाकर (19) ..... का समय है?"

गोदाम का मालिक (20) ..... बोला, "जिसका जाता है, वही जानता (21) ..... है। मुझे क्या करना चाहिए और क्या (22) ..... इसे तुम्हारे जैसे पेटू नहीं समझेंगे (23) ..... पेट भरने से कोई कोना खाली (24) ..... हो तो पचीस-पचास आलू और खा (25) ..... और अपना रास्ता नापो।"

गोपाल भांड़ (26) ..... गए कि गोदाम के मालिक को (27) ..... आलू खाना बिल्कुल अच्छा नहीं लगा (28) .....। वह गोदाम के मालिक के निकट (29) ..... बोले, "अच्छा तब तो ठीक-ठीक खबर (30) ..... ही दे सकते हैं।"

"कैसी खबर?" गोदाम के मालिक ने झल्लाकर पूछा।

"यही कि इस बार का कोटा तो पूरा कर लिया है, अब गोदाम में दोबारा आग कब लगेगी, जिससे फिर आलू खाने आऊँ।" गोपाल

भांड़ ने हँसकर कहा और अपने रास्ते पर आगे बढ़ गए।

गतिविधि-2 प्रश्न बनाना

गतिविधि के अंतर्गत बच्चों द्वारा जो प्रश्न बनाए गए, वे इस तरह हैं–

1. गोदाम का मालिक क्यों चिढ़ गया?
2. आलू खाने से गोपाल भांड़ का पेट कैसा हो गया?
3. गोदाम किस कारण से जल गया?
4. गोपाल वहाँ क्यों रुके?
5. गोदाम का मालिक सिर पकड़कर क्यों बैठा था?
6. गोदाम के अंदर क्या रखा हुआ था।
7. गोपाल भांड़ क्यों बैठ गए?
8. पास-पड़ोस के लोग क्या बुझाने का प्रयत्न कर रहे थे।
9. गोदाम का मालिक चिढ़कर क्या बोला?
10. गोपाल भांड़ ने हँसकर क्या कहा?
11. गोपाल भांड़ ने क्या समझा?
12. गोपाल भांड़ क्या खा रहे थे?
13. गोदाम में हज़ारों रुपयों का क्या रखा हुआ था?
14. मालिक सिर क्यों पीट रहा था?

गतिविधि-3 शीर्षक देना

कक्षा में उपस्थित सभी बच्चों में से (क्र सं. 38) एक को छोड़कर सभी ने कहानी के लिए शीर्षक सुझाए जो इस प्रकार हैं–

क्र.सं.	*शीर्षक*
1.	मालिक का गोदाम
2.	मालिक का गोदाम
3.	गोपाल भांड़
4.	गोपाल भांड़ की बातें
5.	गोदाम का मालिक
6.	गोदाम का मालिक चिढ़ता है
7.	गोपाल भांड़
8.	पेट भरा तो राम भला
9.	गोपाल भांड़
10.	गोपाल भांड़
11.	जला हुआ गोदाम
12.	एक आदमी और उसका मालिक
13.	एक बार
14.	जलता हुआ गोदाम
15.	मालिक के आलू
16.	गोपाल
17.	गोपाल भांड़
18.	आचार्य परमहंस प्रमोद
19.	जला हुआ गोदाम
20.	जला हुआ गोदाम
21.	गोपाल भांड़
22.	गोपाल भांड़
23.	आचार्य परमहंस प्रमोद
24.	जंगल में मंगल
25.	गोपाल भांड़
26.	मीठ पेठ
27.	गोपाल भांड़
28.	जला हुआ गोदाम
29.	जला हुआ गोदाम
30.	जलता हुआ गोदाम

31.	जलती हुई आग
32.	गोपाल भांड़
33.	गोपाल भांड़
34.	गोपाल
35.	गोपाल भांड़
36.	चिढ़ना मालिक
37.	गोपाल
38.	
39.	आचार्य परमहंस प्रमोद
40.	जलता हुआ गोदाम
41.	प्रेम चंद
42.	गोपाल भांड़
43.	गोपाल भांड़ जी

गतिविधि-4 सही और स्वीकार्य प्रविष्टियों पर चर्चा

खाली स्थानों में बच्चों द्वारा भरे गए शब्दों पर उनके साथ चर्चा–

निम्नलिखित 10 शब्दों को लेकर कक्षा में बच्चों के साथ चर्चा की गई।

सही शब्द क्रमांक	*सही शब्द*	*बच्चों द्वारा भरे गए शब्द*
2.	खड़ा	बैठा, रोता, परेशान ...
3.	का	की, आ गए, लगे ...
9.	माँगकर	लाए, खरीदकर, लिया, लेकर, डालकर ...
12.	पेट	हाथ, सिर ...
13.	डकार	लाठी, साबुन ...
14.	एक	बड़ा, छोटा, एक ...
16.	सिर	हाथ, सिर ...
19.	लटकाकर	बनाकर, फुलाकर, फेरकर ...
20.	मालिक	आदमी
24.	खाली	बच
29.	निकट	पास

बच्चों द्वारा बताए गए कारण

1. परेशान – ''अपना आलू जलता देखकर वह 'परेशान' हो गया था।''
2. की – ''हमें लगा कि ऐसा होना चाहिए''
   – 'लोग आग बुझाने की कोशिश कर रहे थे।'
3. माँगकर – 'कोई चीज़ दुकान से माँगकर ही लेते हैं'।
   डालकर – ''आलू पर नमक 'डालकर' खाते हैं''।
4. सिर – 'सिर पर हाथ फेरते हैं।'
   हाथ – 'सर, हाथ झाड़ने के लिए।'
5. लाठी – 'चलने के लिए, ज़्यादा खाने के कारण से'।
   साबुन – 'हाथ साफ़ करने के लिए क्योंकि आलू जले हुए थे।'
6. दिल – 'दिल थाम के बैठना होता है।'
   हाथ – 'हाथ थामना सुना हुआ है।'
7. बनाकर – 'मुँह बनाकर बैठना होता है।'
   फुलाकर– 'मुँह फुलाकर भी लोग बैठते हैं।'
   फेरकर – 'गोपाल भांड़ से नाराज़ होने के कारण।'
   छुपाके – 'लज्जा आने से' (आलू जल जाने से उसे लज्जा आ रही थी।)

8. आदमी – (सब ने कहा–आदमी नहीं– 'गोदाम का मालिक'।)
9. बच – 'खाली बचा है।'
10. पास – 'किसी के पास जाते हैं'। 'पास जाकर, नजदीक जाकर'

गतिविधि-5 भाषिक गतिविधियाँ

5.1 मुहावरे

बच्चों से कहा गया कि इस कहानी में जितने भी मुहावरे हैं सभी को बताएँ।

उनके द्वारा बताए गए मुहावरे निम्नलिखित हैं–

1. पेट पर हाथ फेरना
2. मुँह लटकाना
3. सिर पकड़ना
4. सामान्य गोदाम
5. नमक डालकर
6. सिर पीटना
7. सिर थाम के बैठना
8. रास्ता नापना

5.2 मुहावरों से वाक्य

बच्चों से इन मुहावरों से वाक्य बनाने के लिए कहा गया। उनके द्वारा बनाए गए वाक्य इस तरह हैं–

1. सिर पीटना – (दुखी होना)। मोहन की एक चीज़ खो गई तो वह सिर पीटने लगा।
2. सिर पकड़ना – (दु:खी होना) उपर्युक्त
3. सिर थामना – (1) किसी से कोई काम ना हो रहा हो, तो वह सिर थाम के बैठ जाता है।
   (2) सिर में दर्द होने पर वह सिर थाम के बैठ गया।
4. मुँह लटकाना – (1) रोहित का खिलौना टूट गया तो वह मुँह लटका कर बैठ गया।
   (2) मोहन की मम्मी ने चॉकलेट नहीं दी तो वह मुँह लटकाकर बैठ गया।
   (3) मन की बात पूरी ना हुई तो उसने मुँह लटका लिया।
   (4) मेले में ना जाने के कारण (आज्ञा ना मिलने पर) उसने मुँह लटका लिया।
5. रास्ता नापना – (1) अपने दोस्त को मैंने बोला, रास्ता नापो।
   (2) पाठशाला जाने के लिए मम्मी ने कहा, रास्ता नापो।

5.3 अपरिचित शब्द

बच्चों को कहानी से पहली बार सुने गए शब्दों को चुनने के लिए कहा गया।

1. प्रयत्न – कोशिश
2. अधजले
3. जिसका जाता है
4. झल्लाकर
5. चिढ़ना – गुस्से के कारण

5.4 कहानी को संवाद में बदलना

दो बच्चों द्वारा कहानी को उनके बीच वार्तालाप के द्वारा अभिव्यक्त करना। बच्चों से कहा गया कि कहानी को आपस में संवाद के ज़रिए सुनाएँ–

प्रथम दल (दो लड़के)

गोपाल – ऐसी क्या बात हो गई?

गोपाल – ऐसे परेशान हो जाने से कुछ हो जाएगा?

मालिक – देखते नहीं मेरा नुकसान हो गया।

गोपाल – पेट भरो और मस्त रहो।

द्वितीय दल (दो लड़कियाँ)

(गोपाल भांड़ को आलू खाता देखकर)

मालिक – मेरा गोदाम जल रहा है और तुम आलू खा रहे हो।

गोपाल – तुम भी आलू खाओ और मस्त रहो।

मालिक – शर्म नहीं आती तुम्हें।

गोपाल – (दुकानकार से पानी माँगते हुए) आलू तो बड़े ही स्वादिष्ट हैं।

मालिक – पैसे तो मेरे बर्बाद हो रहे हैं, ना।

गोपाल – आलू स्वादिष्ट हैं तो बड़ा मज़ा आ रहा है।

मालिक – लाखों रुपये मेरे गए हैं। तुम अब रास्ता नापो।

गोपाल – पहले ये तो बताओ। दुबारा आग कब लगेगी।

तृतीय दल

गोपाल – (आलू खाते हुए)। क्या हुआ?

मालिक – देखते नहीं आलू जल रहे हैं।

गोपाल – हाँ–हाँ। वो तो देख रहा हूँ।

मालिक – तो पूछ क्यों रहे हो?

गोपाल – आलू तो बड़े ही स्वादिष्ट हैं। अधजले होने पर भी।

मालिक – अपने पेट को रोको।

गोपाल – भूख लगी है। पेट का क्या है ... (नमक माँगता है)

गोपाल – आलू खाओ।

मालिक – जाओ। अपना रास्ता नापो।

गोपाल – क्यूँ क्या हुआ?

मालिक – मेरी मदद करो। जाओ आग बुझाओ।

गोपाल – क्या करूँ। इतने आलू खा लिए कि.

मालिक – तुम तो बस खाते ही रहते हो। पेट भर गया? जाओ।

गोपाल – ये तो बता दो, गोदाम दुबारा कब जलेगा।

चौथा दल

गोपाल – क्या हो गया?

मालिक – देखते नहीं?

गोपाल – इधर के आलू तो बड़े ही स्वादिष्ट हैं।

मालिक – तुम्हें तो खाने से मतलब है।

गोपाल – भाई मैंने इतने आलू खा लिए कि मुझसे तो उठा हीं नहीं जा रहा।

मालिक – तुम्हें अंदाज़ा है। मेरा कितना नुकसान हुआ है।

गोपाल – आलू खाओ। तुम्हारे ही तो हैं। मैं तो चलता हूँ (पानी पीते हुए)।

मालिक – जाओ-जाओ।

पाँचवाँ दल

गोपाल – क्या हाल है?

मालिक – दिख नहीं रहा। आलू जल रहे हैं।

गोपाल – मेरा तो लस्सी पीने का मन कर रहा है। आलू तो बड़े ही स्वादिष्ट हैं। क्या तुमने कभी अधजले आलू के साथ लस्सी पी है?

मालिक : तुम्हारा क्या है? नुकसान तो मेरा हो रहा है।

गोपाल : तुम भी खाओ। कोई मना नहीं है।

मालिक : जाओ आग बुझाने का प्रयत्न करो।

गोपाल : मुझसे तो उठा ही नहीं जा रहा है।

मालिक : (चिढ़ते हुए) खाने के सिवा तुम्हें कुछ और भी आता है क्या?

गोपाल : हाँ-हाँ। बहुत कुछ।

मालिक : क्या-क्या?

गोपाल : खाना, पीना, चलना और चिढ़ाना भी।

5.5 कहानी सुनाना

बच्चों को अपने शब्दों में कहानी सुनाने के लिए कहा गया। बच्चों के द्वारा कहानी सुनाने के क्रम में निम्नलिखित नई बातें (कहानी के संदर्भ में नये तथ्य) सामने आईं–

- आग लगने के बाद सामने के घर से गोपाल भांड़ बाहर निकले।
- गोपाल भांड़ को आग की कोई 'फ़िकर' नहीं थी। (फिकर शब्द का प्रयोग)।
- गोदाम का मालिक बहुत 'Tension' में था। (Tension का प्रयोग)।
- गोपाल भांड़ को आलू पकने की खुशबू नाक में लगी।
- जले हुए आलू की खुशबू की वजह से गोपाल भांड़ का पेट भर गया।

सारे गाँव में आग फ़ैलने की आशंका और गोदाम के मालिक ने गोपाल भांड़ को इससे आगाह भी कराया।

5.6 कहानी से जुड़े प्रश्नों के उत्तर बताना

आग लगने पर क्या-क्या उपाय किए जा सकते हैं, बच्चों ने निम्नलिखित उपाय बताए–

- *फायर ब्रिगेड को बुलाना*
- *एम्बुलेन्स को बुलाना*
- *आग पर मिट्टी डालना*
- *सुरक्षा घेरा*
- *फँसे हुए लोगों को निकालना*

आकलन प्रोत्साहन का एक अवसर

अंकन का नमूना (मूल शब्द पद्धति)

क्लोज़ टेस्ट का अंकन नीचे दिए गए तरीके से किया जा सकता है। एक तरफ विद्यार्थियों के नाम लिखें और दूसरी तरफ खाली जगह में भरे जाने वाले शब्द लिखें। भरे जाने वाले सही शब्दों के लिए '✓' का निशान लगाएँ। सही शब्दों को गिनें। अंतिम कॉलम में उनका प्रतिशत भी निकाला जा सकता है।

शब्द	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	सही शब्द	प्रतिशत
विद्यार्थियों के नाम अथवा क्रमांक	जलता	खड़ा	का	उस	आ	जा	वह	ही	माँगकर	से	खाए	पेट	डकार	एक	एक	थामकर	बोले	हो	बैठने	चिढ़कर	है	नहीं	जाओ	रहा	लो	समझ	उनका	है	आकर	आप		
1	✓	रोता	✓	किसी	जा	✓	✓	अपनी	खरीद कर	✓	✓	सिर	साँस	✓	✓	✓	✓	✓	✓	गुस्से में	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	था	✓	तुम	20	66.67
2	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	शरीर	जम्हाई	✓	✓	✓	✓	✓	✓	गुस्से से	✓	✓	देखो	✓	✓	भाँप	इतने	✓	✓	✓	24	80
3	खराब	परेशान	लगे	वहाँ	✓	✓	✓	✓	लाए	✓	✓	✓	गोली	बड़ा	✓	लटकाए	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	छिप	ढेर सारे	✓	✓	✓	20	66.67
4	नुकसान	जा बैठा	✓	✓	वहाँ	✓	✓	✓	✓	✓	✓	हाथ	अंगड़ाई	दो	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	पता चला	✓	✓	✓	✓	23	76.67
5	✓	रो रहा	की	कुछ	आए	✓	उसी समय	लगी	डालकर	में	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	उनसे	✓	✓	अपना	बचा	✓	✓	✓	✓	✓	✓	19	63.33
6	जला	रोता	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	मुँह	लाठी	✓	✓	✓	✓	✓	✓	उनसे	✓	✓	देखो	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	24	80
7	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	ले लिया	✓	✓	✓	साँस	✓	✓	लटका कर	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	27	90
8	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	लटका कर	✓	✓	✓	गुस्से में	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	28	93.3
9	खराब	बैठा	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	जाने	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	27	90
10	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	निगले	✓	✓	छोटा	✓	✓	बोला	✓	✓	✓	✓	✓	अपना	बचा	✓	✓	✓	✓	✓	तुम	24	80
11	✓	✓	✓	✓	✓	गुजर	तुरंत	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	28	93.33
कुल	7	5	9	8	8	10	9	9	7	10	10	7	5	8	11	8	10	11	10	6	11	11	7	9	11	8	9	10	11	10	कुल	264
प्रतिशत	63.63	45.14	81.81	72.72	72.72	90.90	81.81	81.81	63.63	90.90	90.90	63.63	45.45	72.72	100	72.72	90.90	100	90.90	54.54	100	100	63.63	81.81	100	72.72	81.81	90.90	100	90.90	औसत	24